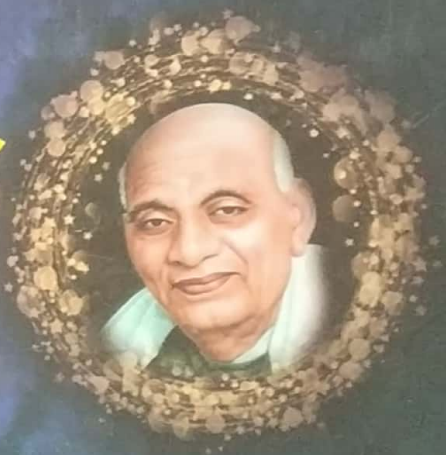

क्रांतीपर्व

लोकशाहीप्रधान देशाची वाटचाल

प्रा. अमर जावळे

प्रा. भूषण काटे – पाटील

Scanned with CamScanner

LAXMI BOOK PUBLICATION

Price: 300 /-

क्रांतीपर्व

लोकषाहीप्रधान देषाची वाटचाल

प्रा. अमर जावळे प्रा. भूषण काटे – पाटील

© 2018 by Laxmi Book Publication, Solapur.
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

ISBN– 978-0-359-01299-2

Published by,
Lulu Publication
3101 Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

Printed by,
Laxmi Book Publication,
258/34, Raviwar Peth,
Solapur, Maharashtra, India.
Contact No. : 9595359435
Website: http://lbp.world/
Email ID: apiguide2014@gmail.com

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

प्रकरण	विषय	पृष्ठ संख्या
१	पंतप्रधान इंदिराजी: आणीबाणी व वृत्तपत्रावरील सेन्सोरशिप	१
२	सरदार वल्लभभाई पटेल आणि राजस्थान	१२
३	इंदिरा पर्वातील राष्ट्रीय आणीबाणी - एक अभ्यास	१६
४	स्व.इंदिरा गांधीच्या छत्रछायेतील काही वर्ष	२३
५	**संस्थान के विलीनीकरण मे सरदार वल्लभभाई पटेल कि भूमिका**	२८
६	**स्व.इंदिराजी गांधी यांच्या कारकीर्दिमधून नेतृत्व विकासाचे धडे**	३३
७	संस्थानिकांच्या विलिनीकरणात सरदार वल्लभभाई पटेल यांची भूमिका	३८
८	Vallabhbhai Jhaverbhai Patel and Faizpur Congress १९३६	४२
९	सरदार वल्लभभाई पटेल : एक उत्तम प्रशासक	५४
१०	स्वर्गीय इंदिरा गांधी :: एक कणखर महिला नेतृत्व	५८
११	भारतीय राजनिती का चमकता तारा :- इंदिरा गांधी	६१
१२	भारताच्या आर्थिक विकासातील इंदिरा गांधीचे योगदान	६४
१३	**श्रीमती इंदिरा गांधी यांचे परराष्ट्रीय धोरण व भारतीय सुरक्षा**	७०
१४	लोह पुरूष आणि लेडी सरदार	७४
१५	देशप्रेमी प्रियदर्शनी इंदिरा	७८
१६	अखंडीत भारताचे प्रेणेते :- सरदार वल्लभभाई पटेल	८०
१७	इंदिरा गांधी - एक कार्यकाल नेतृत्व	८३
१८	भारतातील ग्रामिण वित्तीय व्यवस्थेत इंदिरागांधी यांचे योगदान	८४
१९	इंदीरागांधी समग्र विचार : आधुनिक काळाची गरज	९१
२०	भारताच्या पहिल्या महिला पंतप्रधान एक कणखर नेत्या - श्रीमती इंदीरा गांधी	९५
२१	आणीबाणी "विरोधकांची"	९९

Scanned with CamScanner

भारतीय राजनिती का चमकता तारा :- इंदिरा गांधी

प्रा.डॉ. आर.डी.गवारे,
हिंदी विभाग
अ.र.भा. गरुड महाविद्यालय, शेंदुर्णी ता. जामनेर.

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री स्व.इंदिरा गांधी एक ऐसा नाम है जिसके लिए बना 'भारतीय नारी का इतिहास कभी पूरा नही हो सकता। कई विदुषी महिलाओं ने भारत के विकास में अपना अनमोल योगदान दिया है। स्व.इंदिरा गांधी को जन्म से ही राजनितीक माहौल मिला हुआ था। उनके पिता पं. जवाहरलाल नेहरु जी धन और पद से जितने बडे थे उतने मन से भी बडे थे। बचपन से ही उनपर अच्छे संस्कार हुए थे। स्व.इंदिरा गांधी सुबह उठने के बाद कभी चाय नहीं लेती थी। उनके दिन की शुरुआत साधारण नाश्ते के साथ होती थी। देश के विभिन्न प्रांतो में जब वह जाती थी तो वहाँ के स्थानिक पदार्थों का आस्वाद लेना उन्हें अच्छा लगता था। एक दृढ निश्चयी , निर्मल मन की , कठोर निर्णय क्षमता वाली प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने काम किया। उनका संपूर्ण जीवन ही हमारे लिए प्रेरणादायी है।

राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय मसलों पर अभ्यासपूर्ण विवेचन, सामान्य, जनता के प्रति उदारता, प्रखर देशभक्ति , मानवता , शांती एवं सामाजिक न्याय इन गुणों के आधार पर स्व.इंदिराजी भरत की राजनीतिक आदर्श है। उन्होंने स्वतंत्र बांग्लादेश की स्थापना करने में भूमिका निभाई। चौदह बँकोंका राष्ट्रीयीकरण, संस्थानिकोके तनखे बंद आदि निर्णय लेकर अपनी निर्णय क्षमता एवंदूरदृष्टी का परिचय दिया। भारत को आंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत बनाने मे स्व.इंदिरा गांधीजीने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके खुद के शब्दों मे "कुछ सीमित लोगां का समूह यह मेरा परिवार नहीं है। करोडों लोगों का परिवार ही मेरा परिवार है ।आपका परिवार बहुत छोटा है इसलिए आपकी जिम्मेदारीयाँ भी कम है । लेकीन मेरे परिवार के अनेक घटक दु:ख , गरिबी में पीस रहे हैं। मुझे उनके लिए काम करना है ।मेरे परिवार के लोग अलग -अलग ताति-धर्मो के होने के कारण उनमें थेडे-बहुत झगडे , संघर्ष , मनमुटाव होते रहते है। इनकें जो दुर्बल ,असहाय घटक है उनको रक्षा के लिए मुझे अपना कर्तव्य निभाना पडता है । " इसलिए उन्हें लोग 'मदर इंडिया' के नामसे पुकारते थे । उन्हें 'आयर्न लेडी', 'एशिया की लोंह महिला' 'मिलेनियम लेडी' कहा गया।

कितनी भी विपरित परिस्थिती क्यों न हो, उसमें अपनी निर्णय क्षमता का परिचय उन्होंने दिया। देश हित के लिए जो भी आवश्यक था, वह उन्होंने किया । बी.बी.सी. न्युज ने सन १९९९ में एक सर्व्हे किया था। जिसमें दुनियाभर के लोगों ने इंदिरा जी के बारेमे कहा था कि, पिछले एक हजार सालोंमें ऐसा व्यि क्तत्व नही हुआ। सरोजिनी नायडू ने इंदिराजी के बारे मे कहा कि, "इंदिरा नये भारत के इतिहास मे ७०० सालों के बाद

Scanned with CamScanner

कोई महिला दिल्ली के तख्त पर बैठी १ यह समय संकटो और समस्याओं का समय था१ देश में आर्थिक संकट खडा था१ भ्रष्टाचार चरम सीमा पर था१ देश की सीमाए असुरक्षित थी। ऐसे कठीण समय में इंदिराजीने देश की बागडोर सँभाली थी१ बंगलोर अधिवेशन में जो भाषण इंदिराजी ने किया था उसमें वह कहती है, "अनुउत्पादक व्यय और बडी-बडी कंपनियों के अनाप -शनाप खर्चो को रोकना , वित्तीय संस्थानों का राष्ट्रीयकरण, उपभोक्ता वस्तुओ के क्षेत्र में से बडे उद्योगपतियों का एकाधिकार समाप्त करना, कृषी और भूमि सम्बधी कानूनोंमे सुधार " आदि प्रश्न देशके सामने है१ जुलाई १९६९ में उन्होंने चौदह बैंको का राष्ट्रीयीकरण किया। प्रा. किरण सक्सेना जी उनके बारेमे कहती है की, भरत का सौभाग्य रहा है की, यहाँ एकसे बढकर एक प्रधानमंत्रीयोंने देश को सवाँरा है१ देश की दिशा तय करने और उसपर अग्रसर होने का काम पहले प्रधानमंत्री नेहरुजी किया तो जय जवान जय किसान का नारा देकर देश के विकास में आम लोगों की सहभागिता को शास्त्रीजी ने स्वीकृती प्रदान की तो गरिबी हटाओं का नारा देकर दिरा जी ने देश के आम लोगों के प्रति चिंता नहीं प्रकट की बल्कि रानीती का केंद्र आम आदमी है इस चिंतन को स्पष्ट किया १ इंदिराजी को कूल पच्चीस साल काम करने को मिले१ इन पच्चस वर्षोंमे उन्होने देश की गुलाम, कमजोर प्रतिमा को बदलकर सशक्त अन्न उत्पादन, सामाजिक शक्तियों तथा सामाजिक कल्याण में डूबे एक दश का चित्र विश्व के सामने स्थापित किया।

१९५९ को राष्ट्रीय काँग्रेस अध्यक्षपद को स्वीकारा तब उन्होने कहा था कि, हम भारतीय नारी नाजुक नहीं है, हम तो अग्नी के फुल की तरह है। परिस्थिती कितनी भी गंभीर एवं विपरित क्यों न हो उसमें अपनी मानसिकता को बनाये रखना एवं आम आदमी से संपर्क रखना ये बातें उन्होंने अपने जीवन में सँभाली थी। उन्होंने भारत महोत्सव की संकल्पना सामने लायी ।लंडन में भारत महोत्सव का आयोजन करके दो देशों के बीच संबंध मजबूत किये१

इंदिरा गांधी ने २६ जून १९७५ को आपातकाल की घोषणा की, अलाहाबाद हायकोर्ट का फैसला, गुजरात , बिहार राज्योंमे युवकों के आंदोलन इन सबके कारण देशकी परिस्थिती गंभी बनी। उन्होंने राजनीतिक विरोध को जेल में भेजा। निश्चित रुप में आपातकाल के दिन भारतीय राजनिती मे काले दिन थे। लगभग उन्नीस महिने आपातकाल बना रहा। उसके बाद जनता पार्टी का जन्म हुआ १ १९८० से १९८४ के समय में इंदिराजीने अपनी क्षमता को सिध्द किया। उनका १९८२ का सौदी अरब का दौरा महत्वपूर्ण था१ पाकिस्तान ने भारत की प्रतिमा मलिन की, थी जब इंदिराजी सौदी अरब के पोषाख में वहॉ गई थी। वहॉ पर उनका स्वागत किया गया। फिजी में भारतीयों की संख्या बहुत थी १ हिंदी बोनवाले लोग काफी मात्रा में थे। इंदिराजी के स्वागत के लिए वहॉ लोग इकट्ठा हुए थे। उनके ग्रिनिट केंद्र को उन्होने पाँच लाख रुपये की मद्द दी। उन्होने फिजी वासियो को संबोधित करते हुए कहा कि, आप जहॉ रहते हो काम करते हो वहाँ इमानदारी से काम करो। साथ ही अपनी मातृभूमी के प्रति भी सम्मान एवं कृतज्ञता का भाव रखो१ हमारी सांस्कृतीक विरासत को कभी मत भूलो। उन्होंने अमरिका ,रशिया, फिनलँड, डन्मार्क, पॅरिस, लिबिया आदि देशो का दौरा किया१ आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का स्थान मजबुत किया। दी सण्डे दाइम्स् की संपादक ॲण्ड्यु नील ने उनसे पूछा था की , आप के बाद भारत का क्या होगा तब उन्होंने जबाब दिया की, भारत हजारों वर्षो से बना हुआ है। वह दुनिया के सामने टिका हुआ

Scanned with CamScanner

है इसके सामने मेरे ये छियासठ साल कुछ भी नहीं है।भारत टिक कर रहेगा। भारत पर अनेक संकट आये उन संकटों से निकलकर भारत ने अपनी पहचान बनाई है।

ऑपरेशन ब्लू स्टार जैसी निर्णय क्षमता उन्होने दिखाई ? भारत के टंकडे करने की इच्छा रखनवाले आतंकवादी प्रवृत्ती के लोगों को समाप्त किया? भारत की एकात्मता एव अखंडता के लिए उन्होने अपना बलिदान दिया। ३१ अक्टूबर १९८४ को इंदिराजी की हत्या हुई। उनके अंगरक्षक बयंतसिंग ने उनपर गालियाँ चलाई। इंरिाजीने एक भाषण मे कहा था की, कल मैं रहू या न रहूँ , मेरे खून का एक -एक कतरा देश की अखंडता का रक्षण करेगा ? अगर मेरी हत्या हो जाती है जैसा कि कुछेक की आशंका है और कुछ लोग इसके लिए साजिश कर रहे है तो हिंसा हत्यारे के मन और कर्म मे होगी? मेरे मरण में नही क्योंकी कोई ळी नफरत चाहे वह कितनी हर गहरी हो अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति मेरे प्यार को धुंधला नही कर सकती। किसी मे इतना दम नही जो मुढे अपने लक्ष्य से हटा सके ? और इस देश को ओ और आगे ले जाने की मेरी कोशिशों को नाकाम कर सके। मानों अपने मृत्यु की कल्पना उन्हे पहले से ही मालुम हो? एक व्यक्ति का अंत हो सकता है लेकिन विचारों एवं निष्ठा का अंत कभी नही होता? विश्व राजनीती के क्षितिज पर अपनी अमिट छाप छोडनेवाली वह एक युग थी। सचमुच इंदिरा गांधी भारतीय राजनीती का एक चमकता हुआ तारा थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. भारत के प्रधानमंत्री - भगवती शरण मिश्र
२. इंदुसे प्रधानमंत्री - कृष्णा हवीसिंग
३. इंदिरा गांधी बंगलोर ते रायबरेली - वि.स.वाळिंबे
४. दृष्टी आडच्या इंदिरा गांधी- डॉ. के.पी. माथुर
५. हिंदुस्थान की कहानी - जवाहरलाल नेहरु
६. इंदिरा गांधी - ख्वाजा अहमद अब्बास
७. इंदिरा गांधी (एक पोलादी महिला) डॉ. सूर्यकांता अजमेरा

Scanned with CamScanner

संपादक परिचय

प्रा. अमर वसंत जावळे

12 वर्षे अ. र. भा. गरूड महाविद्यालय येथे अर्थशास्त्र विषयाचे अध्यापन

समन्वयक : सरदार वल्लभभाई अध्यापन व संशोधन केंद्र

जिल्हा समन्वयक : विद्यार्थी कल्याण विभाग उत्तर महाराष्ट्र, विद्यापीठ जळगाव.

संशोधन : लघु संशोधन प्रकल्प (युजीसी) पुर्ण, पी.एच.डी. संशोधन सुरू आहे. विविध विषयांवर शोध निबंध प्रकाशित, कार्यशाळा, चर्चासत्रांमध्ये सहभाग

पुरस्कार : उत्कृष्ट रा.से.यो. कार्यक्रम अधिकारी पुरस्कार

संपादन : लोकसेवक

प्रा. भूषण ज्ञानदेव पाटील

10 वर्षापासून अ. र. भा. गरूड महाविद्यालय येथे मराठी विषयाचे अध्यापन

समन्वयक : इंदिरा गांधी अध्ययन व संशोधन केंद्र

संशोधन : पी.एच.डी. संशोधन कार्य अंतिम टप्प्यात, लघु संशोधन प्रकल्प (युजीसी) पुर्ण, विविध विषयांवर शोध निबंध प्रकाशित राष्ट्रीय परिषद समन्वयक

संपादन : लोकसेवक

लेखन : **महानाट्य** – सह्याद्रीची सिंहगर्जना,
1 लघुपट,
1 चित्रपट पटकथालेखन, दिग्दर्शन,
3 गीतांचे ध्वनीमुद्रण, दोन गीतांचा प्रायोगिक चित्रपटांमध्ये समावेश.

ISBN 978-0-359-01299-2 90000
9 780359 012992

Printed by
LAXMI BOOK PUBLICATION, Solapur
Ph.: 0217-2372010 / +91-9595-359-435
Email.: apiguide2014@gmail.com
ayisrj2011@gmail.com
Website.: lbp.world

Published by
Lulu.com
3101, Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

Scanned with CamScanner